श्री बर्लिन गणेशोत्सव
आरती संग्रह

गणपती बाप्पा मोरया

१४.०९.२०२६ – २५.०९.२०२६

Day 1 — आरती अनुक्रमणिका

14.09.2026

1	गणपती अथर्वशीर्ष
2	सुखकर्ता दुःखहर्ता
3	दुर्गे दुर्घट भारी
4	लवथवती विक्राळा
5	येई हो विठ्ठले
6	शेंदूर लाल चढ़ायो
7	घालीन लोटांगण
8	मंत्रपुष्पांजली

BERLIN GANESHOTSAV AARTI SANGRAHA

Day 1

14.09.2026

1. गणपती अथर्वशीर्ष

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः।
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः।
व्यशेम देवहितं यदायुः॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये।

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।
त्वमेव केवलं कर्तासि।
त्वमेव केवलं धर्तासि।
त्वमेव केवलं हर्तासि।

त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।
त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।
ऋतं वच्मि।
सत्यं वच्मि॥

अव त्वं माम्।
अव वक्तारम्।
अव श्रोतारम्।
अव दातारम्।
अव धातारम्।
अवानूचानमव शिष्यम्।

अव पश्चात्तात्।
अव पुरस्तात्।
अवोत्तरात्तात्।
अव दक्षिणात्तात्।
अव चोर्ध्वात्तात्।
अवाधरात्तात्।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्॥ ३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः।
त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः।
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि।
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥ ४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते।
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति।
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः।
त्वं चत्वारि वाक्पदानि॥ ५॥

त्वं गुणत्रयातीतः।
त्वमवस्थात्रयातीतः।
त्वं देहत्रयातीतः।
त्वं कालत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।
त्वं शक्तित्रयात्मकः।
त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्।

त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं।
वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम्॥ ६॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्।
अनुस्वारः परतरः।
अर्धेन्दुलसितम्।
तारेण ऋद्धम्।
एतत्तव मनुस्वरूपम्।

गकारः पूर्वरूपम्।
अकारो मध्यमरूपम्।
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्।
बिन्दुरुत्तररूपम्।
नादः सन्धानम्।
संहिता संधिः।
सैषा गणेशविद्या।
गणकऋषिः।
निचृद्गायत्रीच्छन्दः।
गणपतिर्देवता।
ॐ गं गणपतये नमः॥ ७॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥ ८॥

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥ ९॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये।
नमः प्रमथपतये।
नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय।
श्रीवरदमूर्तये नमः॥ १०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते सः ब्रह्मभूयाय कल्पते।
स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते।
स सर्वतः सुखमेधते॥ ११॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।
सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।
सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति।

धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति॥ १२॥

इदमथर्वशीर्षमशिष्यायन देयम्।
यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति।
सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्॥ १३॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति।
चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति।
इत्यथर्वणवाक्यम्।
ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्।
न बिभेति कदाचनेति॥ १४॥

यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति।
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति।
स मेधावान् भवति।
यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति।
यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥ १५॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति।
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति।
महाविघ्नात्प्रमुच्यते।
महादोषात्प्रमुच्यते।
महापापात्प्रमुच्यते।
स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति।
य एवं वेद इत्युपनिषत्॥ १६॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

।। इति अथर्वशीर्षं गणपति उपनिषद् समाप्तम् ।।

2. सुखकर्ता दुःखहर्ता

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती॥ धृ.॥

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया॥
जय देव जय देव...॥

लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना।
सरळ सोंड वक्रतुंडा त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवरवंदना॥
जय देव जय देव...॥

3. दुर्गे दुर्घट भारी

दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारी।
अनाथनाथे अंबे करुणा विस्तारी॥
वारी वारी जन्ममरणाते वारी।
हारी पडलो आता संकट निवारी॥ १॥

जय देवी जय देवी जय महिषासुरमथिनी।
सुरवरईश्वरवरदे तारक संजीवनी॥ धृ.॥

त्रिभुवनी भुवनी पाहतां तुज ऐसे नाही।
चारी श्रमले परंतु न बोलावे काही॥
साही विवाद करितां पडिले प्रवाही।
ते तूं भक्तालागी पावसी लवलाही॥ २॥

प्रसन्न वदने प्रसन्न होसी निजदासा।
क्लेशापासूनि सोडवी तोडी भवपाशा॥
अंबे तुजवांचून कोण पुरवील आशा।
नरहरि तल्लिन झाला पदपंकजलेशा॥ ३॥

4. लवथवती विक्राळा

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडी माळा।
विषें कंठ काळा त्रिनेत्री ज्वाळा॥
लावण्यसुंदर मस्तकी बाळा।
तेथुनिया जल निर्मळ वाहे झुळझुळा॥ १॥

जय देव जय देव जय श्री शंकरा।
आरती ओवाळू तुज कर्पूरगौरा॥ धृ.॥

कर्पूरगौरा भोळा नयनी विशाळा।
अर्धांगी पार्वती सुमनांची माळा॥
विभूतीचे उधळण शितिकंठ नीळा।
ऐसा शंकर शोभे उमावेल्हाळा॥ जय देव०॥ २॥

देवीदैत्यसंग्रामी तुंबळ झाला।
अंगी विभूति चर्चूनी वृषभ बैसला।
फणीवरधर बांधोनी दंश शमला।
मंदाकिनी सर्वांगी वाहूं लागला॥ जय देव०॥ ३॥

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी।
पंचानन मनमोहन मुनिजनसुखकारी॥
शतकोटीचे बीज वाचे उच्चारी।
रघुकुळटिळक रामदासा अंतरी॥ जय देव जय देव०॥ ४॥

5. येई हो विठ्ठले

येई हो विठ्ठले माझे माऊली ये।
निढळावरी कर ठेऊनी वाट मी पाहे॥ धृ.॥

आलिया गेलिया हाती धाडी निरोप।
पंढरपुरी आहे माझा मायबाप॥
येई हो.॥ १॥

पिवळा पीतांबर कैसा गगनी झळकला।
गरुडावरी बैसून माझा कैवारी आला॥
येई हो.॥ २॥

विठोबाचे राज आम्हां नित्य दिपवाळी।
विष्णुदास नामा जीवेंभावे ओंवाळी॥
येई हो विठ्ठले.॥ ३॥

6. शेंदूर लाल चढ़ायो

शेंदूर लाल चढ़ायो अच्छा गजमुख को,
दोंदिल लाल बिराजे सुत गौरिहर को,
हाथ लिए गुडलड्डु सांई सुरवर को,
महिमा कहे न जाय लागत हूं पद को।

जय देव जय देव।
जय जय श्री गणराज विद्या सुखदाता,
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मन रमता,
जय देव जय देव।

भावभगत से कोई शरणागत आवे,
संतति संपत्ति सबहि भरपूर पावे,
ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे,
गोसावीनन्दन निशिदिन गुण गावे,
जय देव जय देव।

जय जय श्री गणराज विद्या सुखदाता,
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मन रमता,
जय देव जय देव।

7. घालीन लोटांगण

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

मन्दारमाला कुलितालिकायै कपालमालांकितशेखराय।
दिव्याम्बराय च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

घालीन लोटांगण, वंदीन चरण।
डोळ्यांनी पाहीन रूप तुझें॥
प्रेमें आलिंगन, आनंदे पूजिन।
भावें ओवाळीन म्हणे नामा॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा। बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै। नारायणायेति समर्पयामि॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

8. मंत्रपुष्पांजली

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने।
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय।
महाराजाय नमः॥

ॐ स्वस्ति।
साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः
सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराळिति।
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।

तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥